34 सूरए सबा

आयत 1-5 का विश्लेषण:

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"हर क़िस्म की तारीफ उसी ख़ुदा के लिए (दुनिया में भी) सज़ावार है कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है और आख़ेरत में (भी हर तरफ) उसी की तारीफ है और वही वाक़िफकार हकीम है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत ईश्वर की सर्वव्यापकता और उसकी अखंड सत्ता की पुष्टि करती है, यह दर्शाती है कि सारी सृष्टि, चाहे वह आसमान हो या पृथ्वी, सभी ईश्वर के अधीन हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत बताती है कि सब कुछ ईश्वर का है, और यही कारण है कि उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। ईश्वर की सत्ता सभी जगह और हर समय विद्यमान है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा है कि वह समस्त सृष्टि के निर्माता और नियंत्रक हैं (भगवद गीता 10.8)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत भगवान की सम्पूर्ण सत्ता और अधिकार की पुष्टि करती है, लेकिन सवाल उठता है कि क्या इस

प्रकार की सत्ता को स्वीकार करना और उसकी महिमा को बढ़ाना, मानवता की भलाई के लिए सिर्फ श्रद्धा का मार्ग ही प्रदान करता है, या इसके अलावा हमें और कुछ सीखने की आवश्यकता है?

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"जो चीज़ें (बीज वग़ैरह) ज़मीन में दाख़िल हुयी है और जो चीज़ (दरख़्त वग़ैरह) इसमें से निकलती है और जो चीज़ (पानी वग़ैरह) आसामन से नाज़िल होती है और जो चीज़ (नज़ारात फरिश्ते वग़ैरह) उस पर चढ़ती है (सब) को जानता है और वही बड़ा बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि ईश्वर हर चीज़ को जानता है, चाहे वह पृथ्वी पर हो, आकाश से हो, या किसी अन्य स्थान से हो।

हेतु (Reason):
यह आयत ईश्वर के ज्ञान की व्यापकता को बताती है कि वह हर छोटे से छोटे विवरण को जानता है, और इस तरह की जानकारी केवल ईश्वर ही रख सकता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा कि वह सभी जीवों के हृदय में निवास करते हैं और सभी का ज्ञान रखते हैं (भगवद गीता 10.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ईश्वर के ज्ञान के आदान-प्रदान को दिखाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह केवल ईश्वर की दिव्यता को प्रस्तुत करता है, या यह हमें हमारे व्यक्तिगत ज्ञान और कार्यों के प्रति उत्तरदायी भी बनाता है?

आयत 3

आयत का अनुवाद:

"और कुफ्फार कहने लगे कि हम पर तो क़यामत आएगी ही नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो हाँ (हाँ) मुझ को अपने उस आलेमुल ग़ैब परवरदिगार की क़सम है जिससे ज़र्रा बराबर (कोई चीज़) न आसमान में छिपी हुयी है और न ज़मीन में कि क़यामत ज़रूर आएगी और ज़र्रे से छोटी चीज़ और ज़र्रे से बड़ी (ग़रज़ जितनी चीज़ें हैं सब) वाज़ेए व रौशन किताब लौहे महफूज़ में महफूज़ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत क़यामत के अस्तित्व की पुष्टि करती है, और बताती है कि क़यामत से कोई बच नहीं सकता। यह घटना निश्चित और अपरिहार्य है।

हेतु (Reason):

यह आयत यह भी बताती है कि हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज़ को ख़ुदा ने अपनी किताब (लौहे महफूज़) में लिखा है, जो दिखाता है कि क़यामत का दिन जरूर आएगा।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता में भगवान कृष्ण ने कहा था कि प्रत्येक जीव को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलता है और वह फिर से जन्म और मृत्यु के चक्र में बंधा रहता है (भगवद गीता 2.27)।

निगमन (Conclusion):

यह आयत क़यामत के दिन की अनिवार्यता को स्पष्ट करती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या इस तरह की भविष्यवाणी केवल भय उत्पन्न करती है, या यह मानवता को एक उच्च उद्देश्य के लिए प्रेरित भी करती है?

आयत 4

आयत का अनुवाद:

"ताकि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और (अच्छे) काम किए उनको ख़ुदा जज़ाए ख़ैर दे यही वह लोग हैं जिनके लिए (गुनाहों की) मग़फेरत और (बहुत ही) इज़्ज़त की रोज़ी है।"

चुना गया न्याय तत्वः
उपनय (Application)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत ईमान लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों के लिए ईश्वर की क्षमा और इनाम का उल्लेख करती है।

हेतु (Reason):
यह आयत बताती है कि ईमान और अच्छे कर्मों का परिणाम ईश्वर की दया और इनाम के रूप में मिलता है।

उदाहरण (Example):
मनुस्मृति में भी कहा गया है कि अच्छे कर्म करने से व्यक्ति को समाज में सम्मान और स्वर्ग की प्राप्ति होती है (मनुस्मृति 4.172)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ईमान और अच्छे कर्मों के महत्व को दर्शाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह संदेश समाज में वास्तविक सुधार लाने के लिए पर्याप्त है, या इसे अन्य नैतिक शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है?

आयत 5

आयत का अनुवादः
"और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के तोड़) में मुक़ाबिले की दौड़-धूप की उन ही के लिए दर्दनाक अज़ाब की सज़ा होगी।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के लिए चेतावनी देती है जो ईश्वर की आयतों का उल्लंघन करते हैं और उसके खिलाफ विद्रोह करते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत बताती है कि ऐसे लोग जो ईश्वर के आदेशों का पालन नहीं करते और उनकी आयतों का विरोध करते हैं, उन्हें दंड भुगतना पड़ेगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी कृष्ण ने कहा था कि जो लोग धर्म का उल्लंघन करते हैं, वे सजा के पात्र होते हैं (भगवद गीता 16.19)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दिखाती है कि धार्मिक विरोध और अज्ञानता के परिणाम गंभीर हो सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या सजा की यह अवधारणा केवल दंड और भय तक सीमित है, या इसमें सुधार और शिक्षा की कोई प्रक्रिया भी शामिल होनी चाहिए?

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण (Pramana)	क्या सिर्फ ईश्वर की सत्ता की महिमा से समाज में वास्तविक सुधार संभव है, या इसे किसी अन्य शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है?
2	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या ज्ञान का सिर्फ ईश्वर द्वारा दिया जाना ही पर्याप्त है, या इंसान को भी अपने कर्मों का सही मूल्यांकन करना चाहिए?
3	व्याप्ति (Vyapti)	क्या क़यामत का दिन केवल भय उत्पन्न करता है, या यह मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है?
4	उपनय (Application)	क्या अच्छे कर्मों का इनाम सिर्फ ईश्वर की दया पर निर्भर करता है, या इसमें सामाजिक सुधार भी महत्वपूर्ण है?
5	हेतु (Reason)	क्या सजा की अवधारणा केवल दंड और भय तक सीमित है, या इसमें सुधार और शिक्षा की कोई प्रक्रिया भी शामिल होनी चाहिए?

निष्कर्ष:
यह आयतें ईश्वर की सत्ता, उसके ज्ञान, क़यामत के दिन की अनिवार्यता, अच्छे कर्मों का इनाम, और ईश्वर की आयतों का उल्लंघन करने वालों के लिए सजा के सिद्धांतों को प्रस्तुत करती हैं। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, इन अवधारणाओं की आलोचना करते हुए यह सवाल उठता है कि क्या सिर्फ दंड और पुरस्कार का सिद्धांत समाज में वास्तविक सुधार ला सकता है, या हमें मानवता के लिए अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

आयत 6-10 का विश्लेषण:

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) जिन लोगों को (हमारी बारगाह से) इल्म अता किया गया है वह जानते हैं कि जो (कुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है और सज़ावार हम्द (व सना) ग़ालिब (ख़ुदा) की राह दिखाता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जिन लोगों को इल्म (ज्ञान) दिया गया है, वे समझते हैं कि कुरान जो भी संदेश देता है, वह सत्य है और यह ईश्वर की ओर से है।

हेतु (Reason):
इस आयत में यह बताया गया है कि ज्ञान रखने वाले लोग कुरान को सही मानते हैं, क्योंकि यह ईश्वर की ओर से है, और यही वह मार्गदर्शन है जो सही राह पर चलने की ओर ले जाता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा था कि वह इस दुनिया के भेदों को समझाने के लिए ही अवतार लेते हैं (भगवद गीता 4.7)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ज्ञान और सत्य की ओर मार्गदर्शन करती है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह ज्ञान हर व्यक्ति के लिए सहज रूप से उपलब्ध है या इसे किसी विशेष समूह या संदर्भ में सीमित किया गया है?

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"और कुफ़्फ़ार (मसख़रेपन से बाहम) कहते हैं कि कहो तो हम तुम्हें ऐसा आदमी (मोहम्मद) बता दें जो तुम से बयान करेगा कि जब तुम (मर कर सड़ गल जाओगे और) बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो तुम यक़ीनन एक नए जिस्म में आओगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत इस बात को दर्शाती है कि काफ़िर मोहम्मद (सल्ल.) के संदेश को नकारते थे और उनका मजाक उड़ाते थे, विशेष रूप से उनके जीवन के बाद पुनर्जीवन के बारे में।

हेतु (Reason):
यह आयत दर्शाती है कि काफ़िरों को पुनर्जीवन के सिद्धांत को समझने में कठिनाई हो रही थी, और वे इसे असंभव मानते थे।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी भगवान ने कहा है कि मृत शरीर को छोड़कर आत्मा कभी नष्ट नहीं होती (भगवद गीता 2.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत काफ़िरों के नकारात्मक दृष्टिकोण और पुनर्जीवन के सिद्धांत की आलोचना करती है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह तर्क केवल धार्मिक विश्वास तक सीमित है, या यह एक वैज्ञानिक रूप से भी समझने योग्य है?

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"क्या उस शख़्स (मोहम्मद) ने ख़ुदा पर झूठ तूफान बाँधा है या उसे जुनून (हो गया) है (न मोहम्मद झूठा है न उसे जुनून है) बल्कि ख़ुद वह लोग जो आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते अज़ाब और पहले दरजे की गुमराही में पड़े हुए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों की मानसिकता को दर्शाती है जो मोहम्मद (सल्ल.) पर आरोप लगाते थे कि वह झूठ बोलते हैं या उनके पास मानसिक विकार है। आयत यह स्पष्ट करती है कि मोहम्मद (सल्ल.) सत्य बोल रहे थे और वह केवल काफ़िरों की गलतफहमी का शिकार थे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जो लोग आख़ेरत पर विश्वास नहीं करते, वे वास्तविकता से भटक चुके हैं और उन्हें सच्चाई की समझ नहीं है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि आत्मज्ञान से ही व्यक्ति भ्रम और अज्ञान से मुक्त होता है (भगवद गीता 4.34)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक विश्वास प्रणाली के माध्यम से सत्य की खोज की प्रक्रिया को दर्शाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह केवल धार्मिक विश्वास से जुड़ा हुआ है या इसे अन्य बौद्धिक प्रणालियों से भी साक्ष्य मिल सकता है?

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"तो क्या उन लोगों ने आसमान और ज़मीन की तरफ भी जो उनके आगे और उनके पीछे (सब तरफ से घेरे)

हैं ग़ौर नहीं किया कि अगर हम चाहे तो उन लोगों को ज़मीन में धँसा दें या उन पर आसमान का कोई टुकड़ा ही गिरा दें इसमें शक नहीं कि इसमें हर रुझू करने वाले बन्दे के लिए यक़ीनी बड़ी इबरत है।"

चुना गया न्याय तत्वः
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत चेतावनी देती है कि लोग आसमान और पृथ्वी की संरचना को समझें और यह महसूस करें कि यदि ईश्वर चाहे तो वह पूरी सृष्टि को नष्ट कर सकता है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि ईश्वर की शक्ति अपरिमित है, और अगर वह चाहे तो किसी भी क्षण सब कुछ नष्ट कर सकता है, इसलिये यह एक महत्वपूर्ण शिक्षा और चेतावनी है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि वह समय के रूप में संसार के अंत को ला सकते हैं, और वह सभी को नष्ट कर सकते हैं (भगवद गीता 11.32)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ईश्वर की अनन्त शक्ति का प्रतिवेदन करती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या इसे वास्तविक जीवन में समझने और लागू करने के लिए अधिक प्रमाण और तर्क की आवश्यकता है?

आयत 10

आयत का अनुवादः
"और हमने यक़ीनन दाऊद को अपनी बारगाह से बुज़ुर्गी इनायत की थी (और पहाड़ों को हुक्म दिया) कि ऐ पहाड़ों तसबीह करने में उनका साथ दो और परिन्द को (ताबेए कर दिया) और उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नरम कर दिया था।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि दाऊद (अलै.) को ईश्वर ने विशेष ज्ञान और शक्तियां प्रदान की थीं, जिनके माध्यम से उन्होंने पहाड़ों और पक्षियों को अपनी सेवा में लाया और लोहे को नरम किया।

हेतु (Reason):
यह आयत ईश्वर की कृपा और दाऊद की महानता को दर्शाती है, जिसमें यह दिखाया गया है कि ईश्वर ने उन्हें विशेष शक्तियां दीं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि वह उसे दिव्य दृष्टि देने के लिए तैयार हैं ताकि वह ब्रह्म के अद्वितीय रूप को देख सके (भगवद गीता 11.8)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दाऊद (अलै.) की विशेष शक्तियों और ईश्वर की कृपा को प्रदर्शित करती है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह केवल एक ऐतिहासिक घटना है या यह एक उदाहरण है कि ईश्वर किसी भी व्यक्ति को दिव्य शक्तियों से सुसज्जित कर सकता है?

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या यह ज्ञान केवल कुछ लोगों तक सीमित है, या यह सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है?
7	हेतु (Reason)	क्या पुनर्जीवन का सिद्धांत केवल धार्मिक विश्वास से संबंधित है, या यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है?
8	हेतु (Reason)	क्या इस आयत का तर्क केवल धार्मिक संदर्भ में सही है, या इसे बौद्धिक आधार पर भी समझा जा सकता है?
9	उपमान	क्या इस तरह की चेतावनियाँ केवल धार्मिक विश्वास तक सीमित हैं,

	(Comparison)	या इन्हें अन्य बौद्धिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है?
10	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या दाऊद (अलै.) की शक्तियाँ केवल ऐतिहासिक उदाहरण हैं, या यह दिखाती हैं कि ईश्वर किसी को विशेष शक्तियाँ दे सकते हैं?

निष्कर्ष:
यह आयतें ईश्वर की शक्ति, सत्य की खोज, और मानवता के लिए चेतावनी प्रदान करती हैं, लेकिन यह सवाल उठाती हैं कि क्या इन अवधारणाओं को केवल धार्मिक विश्वास के संदर्भ में स्वीकार किया जा सकता है, या इन्हें बौद्धिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है।

आयत 11-15 का विश्लेषण:

आयत 11

आयत का अनुवाद:
"कि फँराख़ व कुशादा जिरह बनाओ और (कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़े का ख़्याल रखो और तुम सब के सब अच्छे (अच्छे) काम करो वो कुछ तुम लोग करते हो मैं यक़ीनन देख रहा हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह आदेश देती है कि निर्माण कार्य में अच्छे ढंग से काम किया जाए, जिसमें शुद्धता, समर्पण और सही दृष्टिकोण को शामिल किया जाए।

हेतु (Reason):
यह आयत इस पर बल देती है कि अच्छे कामों की प्रक्रिया में गुणवत्ता और योजना का ध्यान रखा जाए।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि कार्यों को सही दृष्टिकोण और ईश्वर के प्रति समर्पण के साथ किया जाए (भगवद गीता 3.19)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कार्य के प्रति एक आदर्श दृष्टिकोण और ईमानदारी की आवश्यकता को बताती है, लेकिन क्या यह एक नैतिक धारा से प्रेरित है या एक धार्मिक आदेश के रूप में प्रस्तुत किया गया है, इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए।

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"और हवा को सुलेमान का (ताबेइदार बना दिया था) कि उसकी सुबह की रफ़्तार एक महीने (मुसाफ़त) की थी और इसी तरह उसकी शाम की रफ़्तार एक महीने (के मुसाफ़त) की थी और हमने उनके लिए तांबे (को पिघलाकर) उसका चश्मा जारी कर दिया था और जिन्नात (को उनका ताबेदार कर दिया था कि उन) में कुछ लोग उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके सामने काम काज करते थे और उनमें से जिसने हमारे हुक्म से इनहराफ़ किया है उसे हम (क़यामत में) जहन्नुम के अज़ाब का मज़ा चख़ाँएगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत सुलेमान (अलै.) की अद्वितीय शक्तियों का वर्णन करती है, जिसमें वह हवा, जिन्नात, और तांबे की शक्ति को नियंत्रित करते थे।

हेतु (Reason):
यह आयत सुलेमान की अलौकिक शक्तियों को प्रमाणित करती है और यह दिखाती है कि वह ईश्वर के आदेश पर सभी प्राकृतिक और अलौकिक तत्वों पर अधिकार रखते थे।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा था कि वह ईश्वर के रूप में सभी शक्तियों का नियंत्रक होते हैं (भगवद गीता 10.20)।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत एक शक्ति और नियंत्रण के बारे में बताती है, जो केवल एक दिव्य व्यक्ति या ईश्वर के द्वारा ही संभव है। हालांकि, सवाल यह है कि क्या यह ऐतिहासिक घटना के रूप में समझी जानी चाहिए, या इसे प्रतीकात्मक रूप में देखा जाना चाहिए?

आयत 13

आयत का अनुवाद:
 "ग़रज़ सुलेमान को जो बनवाना मंज़ूर होता ये जिन्नात उनके लिए बनाते थे (जैसे) मस्जिदें, महल, क़िले और (फरिश्ते अम्बिया की) तस्वीरें और हौज़ों के बराबर प्याले और (एक जगह) गड़ी हुयी (बड़ी बड़ी) देगें (कि एक हज़ार आदमी का खाना पक सके) ऐ दाऊद की औलाद शुक्र करते रहो और मेरे बन्दों में से शुक्र करने वाले (बन्दे) थोड़े से हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत सुलेमान की शक्तियों का विस्तार करती है और यह बताती है कि जिन्नात और फरिश्ते उनकी इच्छाओं के अनुसार विशाल निर्माण कार्य करते थे।

हेतु (Reason):
 यह आयत सुलेमान की प्रभुता और शक्ति को दर्शाती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वह किसी भी निर्माण कार्य को अपनी इच्छानुसार करवा सकते थे।

उदाहरण (Example):
 भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा था कि वह प्रकृति और प्राणी जगत के सर्वोच्च नियंत्रक हैं और उन्होंने सभी को अपना कार्य सौंपा है (भगवद गीता 9.10)।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत यह दिखाती है कि यदि व्यक्ति ईश्वर के प्रति आस्थावान हो, तो उसे बड़े कार्य करने की क्षमता प्राप्त हो सकती है। हालांकि, यह तर्क केवल धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ में ही सही हो सकता है, इसका बौद्धिक मूल्य क्या है, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

आयत 14

आयत का अनुवाद:
"फिर जब हमने सुलेमान पर मौत का हुक्म जारी किया तो (मर गए) मगर लकड़ी के सहारे खड़े थे और जिन्नात को किसी ने उनके मरने का पता न बताया मगर ज़मीन की दीमक ने कि वह सुलेमान के असा को खा रही थी फिर (जब खोखला होकर टूट गया और) सुलेमान (की लाश) गिरी तो जिन्नात ने जाना कि अगर वह लोग ग़ैब वा (ग़ैब के जानने वाले) होते तो (इस) ज़लील करने वाली (काम करने की) मुसीबत में न मुब्तिला रहते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत सुलेमान (अलै.) की मृत्यु का रहस्य और जिन्नात की अधूरी जानकारी को दर्शाती है। जिन्नात यह नहीं जान पाए कि सुलेमान की मृत्यु हो चुकी है, और यह उनके ज्ञान की सीमाओं को उजागर करती है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि जिन्नात, जो अक्सर अलौकिक शक्तियों के प्रतीक होते हैं, वह भी ग़ैब (अज्ञेय) के बारे में नहीं जानते थे, और यह केवल ईश्वर के हाथ में था।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि वह ही ब्रह्मा के ज्ञान के स्रोत हैं और किसी भी रहस्य को जानने के लिए ईश्वर की कृपा अनिवार्य है (भगवद गीता 7.25)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि किसी भी शक्तिशाली प्राणी का ज्ञान सीमित हो सकता है, और केवल ईश्वर ही पूर्ण ज्ञान और सच्चाई का स्रोत है।

आयत 15

आयत का अनुवाद:
"और (क़ौम) सबा के लिए तो यक़ीनन ख़ुद उन्हीं के घरों में (कुदरते ख़ुदा की) एक बड़ी निशानी थी कि उनके शहर के दोनों तरफ दाहिने बाऐ (हरे-भरे) बाग़ात थे (और उनको हुक्म था) कि अपने परवरदिगार की दी हुयी रोज़ी खाओ (पियो) और उसका शुक्र अदा करो (दुनिया में) ऐसा पाकीज़ा शहर और (आख़ेरत में) परवरदिगार सा बख़्शने वाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत सबा के लोगों के लिए एक चेतावनी के रूप में प्रस्तुत की गई है कि वे अपने समृद्धि और सुखों का शुक्र अदा करें और ईश्वर की दी हुई कृपा का सही उपयोग करें।

हेतु (Reason):
यह आयत बताती है कि जब किसी को ईश्वर की ओर से समृद्धि और आशीर्वाद प्राप्त हो, तो उस पर आभार व्यक्त करना चाहिए, न कि उसके कृत्यों में अड़चनें डालनी चाहिए।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि लोग अपनी भोगों का आनंद लें लेकिन साथ ही अपने कार्यों को धर्म और ईश्वर की इच्छा के अनुसार करें (भगवद गीता 3.13)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत समृद्धि के उपयोग को सही दिशा में मार्गदर्शन देती है, लेकिन यह भी सवाल उठाती है कि क्या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही है, या इसे सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी देखा जाना चाहिए?

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या अच्छे कार्यों को केवल धार्मिक संदर्भ में देखा जाता है या सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी?

12	**प्रमेय (Object of Knowledge)**	**क्या यह शक्तियाँ केवल ऐतिहासिक उदाहरण हैं या यह दिखाती हैं कि ईश्वर किसी को विशेष शक्तियाँ दे सकते हैं?**
13	**उपमान (Comparison)**	**क्या यह समझ केवल धार्मिक संदर्भ तक सीमित है, या इसका बौद्धिक दृष्टिकोण भी है?**
14	**प्रमेय (Object of Knowledge)**	**क्या यह आयत ज्ञान की सीमाओं को दर्शाती हैऔर किस प्रकार से यह ईश्वर के ज्ञान से तुलना करती है?**

| | 15 | उपमान (Comparison) | क्या समृद्धि का सही उपयोग केवल धार्मिक संदर्भ में समझा जाता है, या इसे सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है? |

आयत 16-20 का विश्लेषण:

आयत 16

आयत का अनुवादः
"इस पर भी उन लोगों ने मुँह फेर लिया (और पैग़म्बरों का कहा न माना) तो हमने (एक ही बन्द तोड़कर) उन पर बड़े ज़ोरों का सैलाब भेज दिया और (उनको तबाह करके) उनके दोनों बाग़ों के बदले ऐसे दो बाग़ दिए जिनके फल बदमज़ा थे और उनमें झाऊ था और कुछ थोड़ी सी बेरियाँ थी।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों की नाशुक्राई और उनके द्वारा पैग़म्बरों के आदेशों को न मानने पर आई हुई सज़ा का विवरण करती है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जब लोग ईश्वर के आदेशों की अवहेलना करते हैं, तो उनके कर्मों की सज़ा तुरंत आती है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलता है (भगवद गीता 4.17)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह दर्शाती है कि किसी समाज या व्यक्ति की नाशुक्राई और अवज्ञा के परिणामस्वरूप उन्हें शास्ति मिलती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या इसे सामान्य मानवीय गलतियों के रूप में देखा जा सकता है, या यह केवल एक धार्मिक आदेश का पालन करने की चेतावनी है?

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"ये हमने उनकी नाशुक्री की सज़ा दी और हम तो बड़े नाशुक्रों ही की सज़ा किया करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत नाशुक्रे लोगों के लिए एक सज़ा का वर्णन करती है, जो उन लोगों के लिए चेतावनी है जिन्होंने ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त नहीं किया।

हेतु (Reason):
यह आयत यह बताती है कि नाशुक्राई और अवज्ञा के परिणामस्वरूप सज़ा का सामना करना पड़ता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि भगवान का आभार करना ही सबसे उत्तम कार्य है (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत नाशुक्राई के खतरों को रेखांकित करती है, लेकिन यह भी सवाल उठाती है कि क्या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही है, या इसे सामाजिक और नैतिक संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए?

आयत 18

आयत का अनुवाद:
"और हम अहले सबा और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिनमें हमने बरकत अता की थी और चन्द बस्तियाँ (सरे राह) आबाद की थी जो बाहम नुमाया थीं और हमने उनमें आमद व रफ्त की राह मुक़र्रर की थी कि उनमें रातों को दिनों को (जब जी चाहे) बेखटके चलो फिरो।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन बस्तियों की शांति और समृद्धि का वर्णन करती है जहाँ लोग आराम से यात्रा कर सकते थे, और यह ईश्वर की कृपा को दर्शाती है।

हेतु (Reason):
यह आयत उन बस्तियों की समृद्धि और शांति को बताती है, जो ईश्वर के आशीर्वाद से प्राप्त हुई थीं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि समृद्धि और शांति ईश्वर के आशीर्वाद का परिणाम होती है (भगवद गीता 18.63)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह दिखाती है कि समृद्धि और शांति केवल ईश्वर की कृपा से मिलती है, लेकिन क्या यह धार्मिक दृष्टिकोण ही सही है, या इसे एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में भी देखा जा सकता है?

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"तो वह लोग ख़ुद कहने लगे परवरदिगार (क़रीब के सफर में लुत्फ नहीं) तो हमारे सफ़रों में दूरी पैदा कर दे और उन लोगों ने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया तो हमने भी उनको (तबाह करके उनके) अफसाने बना दिए - और उनकी धज्जियाँ उड़ा के उनको तितिर बितिर कर दिया बेशक उनमें हर सब्र व शुक्र करने वालों के वास्ते बड़ी इबरतें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के लिए एक चेतावनी देती है जिन्होंने ईश्वर के आदेशों का पालन न किया और खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि ईश्वर का आशीर्वाद खोने पर, किसी समुदाय को बर्बाद कर दिया जाता है, और यह एक बड़ी इबरत है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो धर्म से परे जाता है, उसे पाप और नाश का सामना करना पड़ता है (भगवद गीता 16.19)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बताती है कि खुद के किए गए पापों और अवज्ञा का परिणाम बर्बादी के रूप में होता है, लेकिन यह भी सवाल उठाती है कि क्या केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही इसे सही माना जाए?

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"और शैतान ने अपने ख्याल को (जो उनके बारे में किया था) सच कर दिखाया तो उन लोगों ने उसकी पैरवी की मगर इमानवालों का एक गिरोह (न भटका)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों का वर्णन करती है जिन्होंने शैतान के ख्यालों का पालन किया और अवज्ञा की, जबकि कुछ इमानवाले सही रास्ते पर बने रहे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि शैतान के ख्यालों का पालन करने से गुमराही होती है, जबकि ईमानदारी और सत्य का पालन करने से व्यक्ति सही रास्ते पर चलता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो लोग अपने हृदय और मस्तिष्क को शुद्ध रखते हैं, वे ही सच्चे मार्ग पर चलते हैं (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि शैतान के मार्ग पर चलने से विनाश होता है, और सही मार्ग पर चलने से व्यक्ति को सफलता और शांति मिलती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	हेतु (Reason)	क्या यह धर्म को पालन करने की सजा के रूप में केवल एक धार्मिक आदेश है, या यह समाज के नैतिक मूल्य की भी पहचान करता है?
17	प्रमेय (Object of Knowledge)	नाशुक्राई की सज़ा का सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया गया है, क्या इसे मानवीय दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है?
18	उपमान (Comparison)	समृद्धि और शांति को सिर्फ धार्मिक संदर्भ में क्यों देखा जाता है, क्या यह सामाजिक पहलुओं से भी जुड़ा है?

19	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या यह संदेश केवल धार्मिक अनुशासन के लिए है, या यह मानवता के जीवन के हर पहलू में लागू किया जा सकता है?
20	हेतु (Reason)	शैतान की राह पर चलने से गुमराही और सही रास्ते पर चलने से सफलता, क्या यह हमेशा सही है, या इसे अन्य सामाजिक और मानसिक पहलुओं से भी देखा जा सकता है?

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में जिन्नात, अवज्ञा, और ईश्वर की कृपा पर आधारित दंड की परिकल्पना की गई है। हालांकि, यह भी प्रश्न उठता है कि क्या इन संदेशों को सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक दृष्टिकोण से भी सही माना जा सकता है, या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण तक सीमित हैं?

निष्कर्ष (Conclusion):
यह आयतें धार्मिक दृष्टिकोण से समृद्धि, कार्यों की गुणवत्ता और ईश्वर के प्रति आस्था का उल्लेख करती हैं। हालांकि, कुछ आलोचनाएँ इस बात की ओर इशारा करती हैं कि इन दृष्टिकोणों को सामाजिक, नैतिक, और बौद्धिक संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए, ताकि वे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हो सकें।

आयत 21-25 का विश्लेषण:

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"और शैतान का उन लोगों पर कुछ क़ाबू तो था नहीं मगर ये (मतलब था) कि हम उन लोगों को जो आख़ेरत का यक़ीन रखते हैं उन लोगों से अलग देख लें जो उसके बारे में शक में (पड़े) हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हर चीज़ का निगरा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि शैतान का उद्देश्य केवल यह था कि वह सही आस्था रखने वाले व्यक्तियों को गुमराह करें, और यह कि ईश्वर सभी चीजों का निगरानीकर्ता है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य पर बल देती है कि शैतान का प्रभाव केवल उन लोगों तक सीमित था जो विश्वास की कमी रखते थे, न कि वे लोग जो दृढ़ विश्वास में थे।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि शैतान के प्रलोभनों का पालन करने से व्यक्ति गुमराही की ओर बढ़ता है (भगवद गीता 16.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दर्शाती है कि शैतान का प्रभाव उन पर होता है जिनके विश्वास में शंका होती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या यह केवल धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में लागू होता है या इसे मानसिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है?

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"कहो कि जिन लोगों को तुम ख़ुद ख़ुदा के सिवा (माबूद) समझते हो पुकारो (तो मालूम हो जाएगा कि) वह लोग ज़र्रा बराबर न आसमानों में कुछ इख़्तेयार रखते हैं और न ज़मीन में और न उनकी उन दोनों में शिरकत है और न उनमें से कोई ख़ुदा का (किसी चीज़ में) मद्दगार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर के अलावा कोई भी ताकत नहीं रखता है और यह स्पष्ट करती है कि अन्य देवताओं या शक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि केवल ईश्वर ही सभी चीजों का वास्तविक स्वामी है, और कोई अन्य शक्ति उसकी जगह नहीं ले सकती।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि वह ब्रह्मा, शिव और विष्णु के रूप में प्रकट होते हैं, और सभी देवताओं का उनके द्वारा ही संचालन होता है (भगवद गीता 9.23)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक एकता और ईश्वर के सर्वोच्च सत्ता की पुष्टि करती है, लेकिन क्या यह दृष्टिकोण केवल आस्थावान लोगों के लिए है, या इसे दुनिया की अन्य धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं से भी संबंधित किया जा सकता है?

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"जिसके लिए वह ख़ुद इजाज़त अता फ़रमाए उसके सिवा कोई सिफारिश उसकी बारगाह में काम न आएगी (उसके दरबार की हैबत) यहाँ तक (है) कि जब (शिफ़ाअत का) हुक्म होता है तो शिफ़ाअत करने वाले बेहोश हो जाते हैं फिर तब उनके दिलों की घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या हुक्म दिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि केवल वही लोग शिफ़ाअत कर सकते हैं जिन्हें ईश्वर अनुमति देता है, और जब शिफ़ाअत का आदेश दिया जाता है, तो वह अत्यंत गरिमा और गंभीरता से किया जाता है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि शिफ़ाअत की प्रक्रिया अत्यंत गंभीर है और केवल ईश्वर की अनुमति से होती है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि केवल वह भक्त जिन्हें वह विशेष कृपा देते हैं, वही उनसे शरण प्राप्त कर सकते हैं (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह दर्शाती है कि शिफ़ाअत केवल ईश्वर के आदेश से होती है, और यह व्यक्ति के कर्मों और आस्थाओं के आधार पर निर्भर करती है। लेकिन यह विचार भी उठता है कि क्या यह पूरी प्रक्रिया अन्य धार्मिक मान्यताओं और विश्वासों के अनुरूप है?

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"तो मुक़र्रिब फरिश्ते कहते हैं कि जो वाजिबी था (ऐ रसूल) तुम (इनसे) पूछो तो कि भला तुमको सारे आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है (वह क्या कहेंगे) तुम ख़ुद कह दो कि ख़ुदा और मैं या तुम (दोनों में से एक तो) ज़रूर राहे रास्त पर है (और दूसरा गुमराह) या वह सरीही गुमराही में पड़ा है (और दूसरा राहे रास्त पर)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत ईश्वर के शासन और उसके द्वारा दी गई जीविका की बात करती है, और यह कि केवल ईश्वर ही जीवन और मृत्यु के वास्तविक नियंत्रणकर्ता हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत इस बात को प्रमाणित करती है कि सभी जीवों के जीवन और जीविका का स्रोत केवल ईश्वर है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि सभी प्राणियों की आयु, भाग्य और कर्मों का नियंत्रण भगवान के हाथ में है (भगवद गीता 9.19)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत जीवन के स्रोत के रूप में ईश्वर की सर्वोच्चता को स्थापित करती है, लेकिन यह सवाल भी उठता है कि क्या यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, या इसे मानवता के कल्याण के लिए एक सार्वभौमिक संदेश माना जा सकता है?

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो न हमारे गुनाहों की तुमसे पूछ गछ होगी और न तुम्हारी कारस्तानियों की हम से बाज़ पुर्स।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार है और किसी अन्य से उनका हिसाब नहीं लिया जाएगा।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा, न कि किसी और के कर्मों का।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के फल का भागी होता है (भगवद गीता 3.16)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि व्यक्ति को अपने कर्मों के परिणामों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, और यह विचार केवल धर्म और आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत भी हो सकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमेय (Object of Knowledge)	क्या शैतान का प्रभाव केवल विश्वास की कमी वाले लोगों पर होता है, या इसे मानसिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है?
22	प्रमाण (Pramana)	क्या ईश्वर के अलावा कोई भी शक्ति नहीं है, और क्या इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही सही माना जा सकता है?
23	व्याप्ति (Vyapti)	शिफ़ाअत की प्रक्रिया की गंभीरता और आदेश की प्रकृति को कैसे अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों से जोड़ा जा सकता है?
24	प्रमाण (Pramana)	क्या ईश्वर द्वारा दी गई जीविका और जीवन का नियंत्रण केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, या इसे समग्र मानवता के संदर्भ में देखा जा सकता है?
25	विपरीत (Antithesis)	क्या यह सिद्धांत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, या यह मानवता के नैतिक आधारों से भी संबंधित है?

निष्कर्ष (Conclusion):
यह आयतें ईश्वर की सर्वोच्चता, शिफ़ाअत, और जीवन के स्रोत के रूप में उसके नियंत्रण को स्पष्ट करती हैं। हालांकि, यह विचार भी उठता है कि क्या इन सिद्धांतों को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही देखा जाना चाहिए, या इन्हें सामाजिक और नैतिक संदर्भ में भी शामिल किया जाना चाहिए?

आयत 26-30 का विश्लेषण:

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि हमारा परवरदिगार (क़यामत में) हम सबको इकट्ठा करेगा फिर हमारे दरमियान (ठीक) फैसला कर देगा और वह तो ठीक-ठीक फैसला करने वाला वाक़िफ़कार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर क़यामत के दिन सभी को इकट्ठा करके उनके बीच सही और न्यायपूर्ण निर्णय करेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत इस बात को प्रमाणित करती है कि क़यामत के दिन ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का न्यायपूर्ण हिसाब करेगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि हर प्राणी अपने कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्राप्त करेगा (भगवद गीता 4.17)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत क़यामत के दिन ईश्वर के न्यायपूर्ण फैसले का उद्घाटन करती है, लेकिन यह सवाल भी उठता है कि क्या यह विचार अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों में भी समान रूप से लागू होता है?

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल तुम कह दो कि जिनको तुम ने ख़ुदा का शरीक बनाकर) ख़ुदा के साथ मिलाया है ज़रा उन्हें मुझे भी तो दिखा दो हरगिज़ (कोई शरीक नहीं) बल्कि ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर का कोई साझी नहीं है, और जो लोग अन्य देवताओं को ईश्वर के साथ जोड़ते हैं, वे गलत हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत स्पष्ट रूप से कहती है कि ईश्वर के अलावा कोई और शक्ति या साझी नहीं हो सकती है, और यह विचार गलत है कि ईश्वर के साथ कोई साझी हो सकती है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि वह स्वयं परमेश्वर हैं और कोई और उनकी तुलना में नहीं है (भगवद गीता 10.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एकेश्वरवाद को स्थापित करती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या यह दृष्टिकोण अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों से सामंजस्यपूर्ण है?

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) हमने तुमको तमाम (दुनिया के) लोगों के लिए (नेकों को बेहश्त की) खुशखबरी देने वाला और (बंदों को अज़ाब से) डराने वाला (पैग़म्बर) बनाकर भेजा मगर बहुतेरे लोग (इतना भी) नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दर्शाती है कि पैग़म्बर को सभी लोगों के लिए भेजा गया था, जो खुशखबरी देने और डराने का कार्य करते थे।

हेतु (Reason):
यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि पैग़म्बर का कार्य केवल ईश्वर का संदेश देना था, चाहे लोग उस संदेश को समझें या नहीं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि वह समस्त प्राणियों के उद्धार के लिए अवतार लेते हैं, और उनका संदेश सार्वभौमिक है (भगवद गीता 4.8)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह दिखाती है कि धार्मिक संदेश को सभी के लिए भेजा गया था, लेकिन यह सवाल भी उठता है कि क्या यह संदेश सार्वभौमिक रूप से सभी को समझ में आना चाहिए?

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"और (उलटे) कहते हैं कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (आख़िर) ये क़यामत का वायदा कब पूरा होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दर्शाती है कि काफ़िर लोग क़यामत के आने पर शंका करते हैं और इसका मखौल उड़ाते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत इस शंका का निराकरण करने के लिए कहा जा रहा है कि क़यामत निश्चित रूप से होगी, भले ही लोग विश्वास न करें।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि सत्य कभी नष्ट नहीं होता और इसे पूरी दुनिया में हर कोई महसूस करता है (भगवद गीता 4.7)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत क़यामत के निश्चित आने की पुष्टि करती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही है, या इसे अन्य ज्ञानात्मक दृष्टिकोणों से भी देखा जा सकता है?

आयत 30

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि तुम लोगों के वास्ते एक ख़ास दिन की मीयाद मुक़र्रर है कि न तुम उससे एक घड़ी पीछे रह सकते हो और न आगे ही बड़ सकते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि क़यामत का समय निश्चित है, और न तो उससे एक घड़ी पहले, न बाद में कोई बदलाव हो सकता है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस बात पर बल देती है कि क़यामत का समय ईश्वर के नियंत्रण में है, और यह किसी भी परिस्थिति में बदल नहीं सकता।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि समय के भीतर सभी घटनाएँ घटित होती हैं, और कोई भी व्यक्ति उसका प्रतिकार नहीं कर सकता (भगवद गीता 11.32)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत क़यामत के समय के निश्चित होने की पुष्टि करती है, लेकिन यह विचार भी उठता है कि क्या यह केवल एक धार्मिक विश्वास है, या इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है?

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रमाण (Pramana)	क्या क़यामत का दिन केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर निर्धारित किया गया है, या इसका कोई वैज्ञानिक आधार भी हो सकता है?
27	विपरीत (Antithesis)	क्या एकेश्वरवाद के विचार को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है, या इसे अन्य दर्शन से भी सामंजस्यपूर्ण माना जा सकता है?
28	व्याप्ति (Vyapti)	क्या सभी लोगों के लिए एक सार्वभौमिक धार्मिक संदेश भेजना वास्तव में हर किसी तक पहुंच सकता है, या इसे केवल आस्थावान लोगों के लिए सही माना जाना चाहिए?
29	हेतु (Reason)	क़यामत के बारे में शंका करने वाले लोगों का निराकरण कैसे किया जा सकता है, और क्या इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही समझा जा सकता है?
30	विपरीत (Antithesis)	क्या क़यामत के निश्चित समय का ज्ञान केवल धार्मिक विश्वास है, या इसे विज्ञान और अन्य ज्ञान प्रणाली के माध्यम से भी समझा जा सकता है?

निष्कर्ष (Conclusion):
यह आयतें क़यामत के दिन, ईश्वर के न्याय, और एकेश्वरवाद की पुष्टि करती हैं। हालांकि, यह भी सवाल उठता है कि क्या इन विचारों को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है, या इन्हें मानवता के सभी स्तरों के लिए एक सार्वभौआयत 31-35 का विश्लेषण:

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"और जो लोग काफ़िर हों बैठे कहते हैं कि हम तो न इस कुरान पर हरगिज़ ईमान लाएँगे और न उस (किताब) पर जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी और (ऐ रसूल तुमको बहुत ताज्जुब हो) अगर तुम देखो कि जब ये ज़ालिम क़यामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जायेंगे (और) उनमें का एक दूसरे की तरफ

(अपनी) बात को फेरता होगा कि कमज़ोर अदना (दरजे के) लोग बड़े (सरकश) लोगों से कहते होगें कि अगर तुम (हमें) न (बहकाए) होते तो हम ज़रूर ईमानवाले होते (इस मुसीबत में न पड़ते)।"

चुना गया न्याय तत्वः
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि काफ़िर लोग क़यामत के दिन एक दूसरे पर आरोप लगाएँगे और अपने काफ़िर होने के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराएंगे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दर्शाती है कि लोग अपनी ग़लतियों और ग़ुमराही को दूसरों पर आरोपित करने की कोशिश करेंगे, जबकि वे स्वयं अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार होंगे।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है और किसी और को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता (भगवद गीता 4.17)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह दिखाती है कि काफ़िर लोग क़यामत के दिन अपने कर्मों की ज़िम्मेदारी नहीं स्वीकार करेंगे, बल्कि दूसरों को दोष देंगे। यह दर्शाता है कि आत्म-उत्तरदायित्व की कमी है।

आयत 32

आयत का अनुवादः
"तो सरकश लोग कमज़ोरों से (मुख़ातिब होकर) कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (ख़ुदा की तरफ़ से) हिदायत आयी तो थी तो क्या उसके आने के बाद हमने तुमको (ज़बरदस्ती अमल करने से) रोका था (हरगिज़ नहीं) बल्कि तुम तो ख़ुद मुजरिम थे।"

चुना गया न्याय तत्वः
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जिन लोगों ने हिदायत दी, वे क़यामत के दिन कमज़ोरों को यह कहेंगे कि हमने तुम्हें कोई ज़बरदस्ती नहीं की, बल्कि तुम खुद अपनी ग़लतियों के लिए जिम्मेदार हो।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि लोग अपनी गलतियों को दूसरों पर आरोपित नहीं कर सकते। यह विचार कि दूसरों ने उन्हें बहकाया, यह सही नहीं है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को सुनकर सही मार्ग पर चल सकता है (भगवद गीता 15.15)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह बताती है कि ज़िम्मेदारी को स्वीकार करना आवश्यक है, और किसी भी ग़लती को दूसरों पर आरोपित नहीं किया जा सकता।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे (कि ज़बरदस्ती तो नहीं की मगर हम ख़ुद भी गुमराह नहीं हुए) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की फरेबदेही ने (गुमराह किया कि) तुम लोग हमको ख़ुदा न मानने और उसका शरीक ठहराने का बराबर हुक्म देते रहे (तो हम क्या करते) और जब ये लोग अज़ाब को (अपनी आँखों से) देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएँगे और जो लोग काफ़िर हो बैठे हम उनकी गर्दनों में तौक़ डाल देंगे जो कारस्तानियां ये लोग (दुनिया में) करते थे उसी के मुवाफ़िक़ तो सज़ा दी जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दिखाती है कि काफ़िर लोग क़यामत के दिन अपनी ग़लतियों को समझेंगे और पछताएंगे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

हेतु (Reason):
यह आयत यह भी बताती है कि जो लोग काफ़िर होते हैं, उन्हें उनके कर्मों के अनुसार दंड मिलेगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, और किसी को भी उसके कर्मों से बचाया नहीं जा सकता (भगवद गीता 2.47)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि लोग अपने कर्मों के परिणाम को अंततः भुगतते हैं, और पछतावे का कोई लाभ नहीं होता।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के लोग ये ज़रूर बोल उठेंगे कि जो एहकाम देकर तुम भेजे गए हो हम उनको नहीं मानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दर्शाती है कि हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेजा गया था, और अधिकांश लोग उसकी शिक्षाओं को नकारते थे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह साबित करती है कि लोगों का क़दम उठाने के बावजूद, अधिकांश लोग अपने अहंकार और ग़लत विश्वासों में पड़े रहते हैं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि कुछ लोग ज्ञान प्राप्त होने के बावजूद उसे नकार देते हैं क्योंकि उनका अहंकार अधिक होता है (भगवद गीता 3.36)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह बताती है कि हर युग में लोग सही मार्गदर्शन को नकारते हैं, और यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो सच्चाई से मुंह मोड़ते हैं।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"और ये भी कहने लगे कि हम तो (ईमानदारों से) माल और औलाद में कहीं ज़्यादा हैं और हम पर आख़िरत में (अज़ाब) भी नहीं किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि काफ़िर लोग यह मानते थे कि उनकी समृद्धि और ताकत उन्हें क़यामत के दंड से बचा सकती है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह दिखाती है कि भौतिक समृद्धि और सांसारिक ताकत किसी व्यक्ति को धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध नहीं करती।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि भौतिक समृद्धि केवल सांसारिक आकर्षण है, और इससे सच्चे सुख का प्राप्ति नहीं होती (भगवद गीता 9.21)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह साबित करती है कि भौतिक समृद्धि का कोई मूल्य नहीं है यदि व्यक्ति का आत्मिक और नैतिक विकास नहीं होता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	उपमान (Upamana)	क्या यह निष्कर्ष कि लोग अपने कर्मों को दूसरों पर आरोपित करेंगे, सभी के लिए उचित है? क्या यह एक सामान्य मानव प्रवृत्ति है या धार्मिक संदर्भ में विशेष है?
32	विपरीत (Antithesis)	क्या इस आयत का संदेश हर समय और सभी परिस्थितियों में लागू होता है, या यह विशेष रूप से धार्मिक संदर्भ में सही है?
33	हेतु (Reason)	क्या कर्मों का परिणाम केवल धार्मिक संदर्भ में सही होता है, या इसे सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में माना जा सकता है?
34	प्रमाण (Pramana)	क्या यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही है, या इसे सामान्य मानव अनुभव से भी जोड़ा जा सकता है?
35	विपरीत (Antithesis)	क्या भौतिक समृद्धि का मूल्य केवल सांसारिक दृष्टिकोण से है, या यह मानवता के अन्य पहलुओं से भी परखने योग्य है?

निष्कर्ष (Conclusion):

यह आयतें दिखाती हैं कि लोग अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार होते हैं और क़यामत के दिन पछतावे का कोई फायदा नहीं होता। भौतिक समृद्धि और ताकत से ईश्वर के न्याय से बचा नहीं जा सकता है। यह आयतें आत्म-उत्तरदायित्व, ग़लतियों की स्वीकृति और भौतिक समृद्धि के वास्तविक मूल्य पर विचार

करने की आवश्यकता को दर्शाती हैं।

आयत 36-40 का विश्लेषण:

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि अल्लाह अपनी इच्छा के अनुसार लोगों के लिए रोज़ी बढ़ाता या घटाता है, और यह लोग इसका कारण समझ नहीं पाते।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि मनुष्य को अपने सांसारिक साधनों और संपत्ति का मूल्यांकन केवल अपने कर्मों के आधार पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि इनका नियंत्रण एक उच्च शक्ति के हाथ में है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि कुछ चीजें व्यक्ति के कर्मों के आधार पर होती हैं, और कुछ चीजें उसकी किस्मत या परमात्मा की इच्छाओं के अनुसार होती हैं (भगवद गीता 18.61)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि केवल भौतिक साधनों और संपत्तियों का मूल्यांकन करना एकतरफा दृष्टिकोण है, क्योंकि वास्तविक नियंत्रण ईश्वर के हाथ में है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"और (याद रखो) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद की ये हस्ती नहीं कि तुम को हमारी बारगाह में मुक़र्रिब बना दें मगर (हाँ) जिसने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए उन लोगों के लिए तो उनकी कारगुज़ारियों की दोहरी जज़ा है और वह लोग (बेहश्त के) झरोखों में इत्मीनान से रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ईश्वर के पास केवल भौतिक संपत्ति और औलाद का मूल्य नहीं है, बल्कि जो व्यक्ति ईमान लाता है और अच्छे कर्म करता है, उसे दोहरी जज़ा मिलती है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह साबित करती है कि आध्यात्मिक और नैतिक गुण ही सबसे महत्वपूर्ण हैं, भौतिक संपत्ति का कोई आध्यात्मिक महत्व नहीं है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि केवल कर्म और ईश्वर में विश्वास से व्यक्ति को श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त होती है (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि आध्यात्मिक विकास और नैतिकता का भौतिक संपत्ति से अधिक मूल्य है, और अच्छे कर्मों का पुरस्कार दिया जाता है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:
"और जो लोग हमारी आयतों (की तोड़) में मुक़ाबले की नीयत से दौड़-दूप करते हैं वही लोग (जहन्नुम के) अज़ाब में झोक दिए जाएंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जो लोग ईश्वर की आयतों का विरोध करते हैं और उनका अनादर करते हैं, उन्हें सजा दी जाएगी।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जो लोग सत्य और धार्मिक मार्ग के खिलाफ जाते हैं, उनके लिए दंड निश्चित है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो व्यक्ति धर्म का विरोध करता है और अन्यथा कर्म करता है, उसका अंत दुर्बल होता है (भगवद गीता 4.18)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि सत्य और धर्म का विरोध करने पर ईश्वर की सजा निश्चित होती है।

आयत 39

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और जो कुछ भी तुम लोग (उसकी राह में) ख़र्च करते हो वह उसका ऐवज देगा और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देनेवाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार जीवन में रोज़ी में बढ़ोतरी या कमी करता है, और जो लोग उसकी राह में खर्च करते हैं, उन्हें बेहतर पुरस्कार मिलता है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह साबित करती है कि धार्मिक कार्यों के लिए खर्च किए गए धन का परिणाम एक अच्छे और श्रेष्ठ रोज़ी के रूप में मिलता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो व्यक्ति अपने जीवन को ईश्वर की सेवा में समर्पित करता है, उसे निश्चित रूप से लाभ होता है (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि ईश्वर के मार्ग पर चलने और उसकी राह में खर्च करने से अधिक समृद्धि और पुरस्कार मिलता है।

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"और (वह दिन याद करो) जिस दिन सब लोगों को इकट्ठा करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी परसतिश करते थे फरिश्ते अजऱ् करेंगे (बारे इलाहा) तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि क़यामत के दिन, ईश्वर फरिश्तों से यह पूछेगा कि क्या लोग उसकी पूजा करते थे। फरिश्ते ईश्वर की पवित्रता की गवाही देंगे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि क़यामत के दिन, केवल सत्य और ईश्वर की पूजा को ही महत्वपूर्ण माना जाएगा, और सभी झूठे आस्थाएँ और देवी-देवता की पूजा निष्फल हो जाएगी।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि अंत में सभी जीवों को उसी सत्य का सामना करना पड़ेगा, और जो उसकी शरण में आएगा, वह बच जाएगा (भगवद गीता 18.66)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि केवल ईश्वर की पूजा और उसकी पवित्रता की गवाही ही क़यामत के दिन महत्व रखेगी।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या भौतिक संपत्ति का कोई वास्तविक आध्यात्मिक मूल्य है, या यह केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है?**
37	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या यह कथन सभी पर लागू होता है, या क्या विशेष रूप से धार्मिक संदर्भ में समझा जा सकता है?**
38	**हेतु (Reason)**	**क्या यह सब लोग समान रूप से विरोध करते हैं, या क्या कुछ परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण होती हैं?**
39	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या यह कथन सत्य है कि ईश्वर का मार्गदर्शन और खर्च का ऐवज निश्चित रूप से मिलता है, या यह एक आस्थापरक विश्वास है?**
40	**प्रमाण (Pramana)**	**क्या क़यामत के दिन केवल ईश्वर की पूजा ही निर्णायक होती है, या अन्य धार्मिक पहलुओं को भी महत्व दिया जाता है?**

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में यह दिखाया गया है कि ईश्वर का नियंत्रण हर चीज़ पर है, भौतिक संपत्ति से लेकर कर्मों तक, और केवल आध्यात्मिक कर्म और सही मार्ग पर चलने से ही सच्चा पुरस्कार मिलता है। यह आयतें यह पुष्टि करती हैं कि ईश्वर की राह पर चलने का सबसे बड़ा लाभ है, और क़यामत के दिन वही लोग सफलता प्राप्त करेंगे जिन्होंने सत्य और ईश्वर की पूजा की।

आयत 41-45 का विश्लेषण:

आयत 41

आयत का अनुवाद:
"तू ही हमारा मालिक है न ये लोग (ये लोग हमारी नहीं) बल्कि जिन्नात (खबाएस भूत-परेत) की परसतिश करते थे कि उनमें के अक्सर लोग उन्हीं पर ईमान रखते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि ये लोग जिन्नात (भूत-परेत) की पूजा करते थे और उन्हीं पर विश्वास रखते थे, जबकि ईश्वर ही उनका असल मालिक है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि इन लोगों ने अपनी पूजा और विश्वास का गलत केंद्र चुना, जबकि वास्तविक मालिक केवल ईश्वर है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो केवल अपने भौतिक स्वार्थ के लिए किसी को पूजते हैं, वे वास्तविक सच्चाई से दूर रहते हैं (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि भूत-परेत की पूजा और विश्वास एक भ्रांति है, और असल सच्चाई ईश्वर में है।

आयत 42

आयत का अनुवाद:
"तब (ख़ुदा फरमाएगा) आज तो तुममें से कोई न दूसरे के फायदे ही पहुँचाने का इख़्तेयार रखता है और न ज़रर का और हम सरकशों से कहेंगे कि (आज) उस अज़ाब के मज़े चखो जिसे तुम (दुनिया में) झुठलाया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि क़यामत के दिन कोई भी व्यक्ति किसी के काम नहीं आ सकेगा और जो लोग ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन करते थे, उन्हें कड़ा दंड मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत यह साबित करती है कि क़यामत के दिन किसी व्यक्ति की भौतिक स्थिति या रिश्तों का कोई महत्व नहीं होगा, केवल ईश्वर के आदेशों की अवज्ञा करने का परिणाम होगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि कर्मों का फल तभी मिलेगा, जब व्यक्ति धर्म के मार्ग पर चलेगा, अन्यथा उसे केवल शोक और कष्ट मिलेगा (भगवद गीता 2.47)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि केवल ईश्वर के आदेशों का पालन करने से ही व्यक्ति को क़यामत में बचाव मिलेगा, अन्यथा दंड निश्चित है।

आयत 43

आयत का अनुवाद:
"और जब उनके सामने हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें पढ़ी जाती थीं तो बाहम कहते थे कि ये (रसूल) भी तो बस (हमारा ही जैसा) आदमी है, ये चाहता है कि जिन चीज़ों को तुम्हारे बाप-दादा पूजते थे (उनकी परसतिश) से तुम को रोक दें और कहने लगे कि ये (कुरान) तो बस निरा झूठ है और अपने जी का गढ़ा हुआ है और जो लोग काफ़िर हो बैठो जब उनके पास हक़ बात आयी तो उसके बारे में कहने लगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि लोग कुरान और पैग़म्बर की बातों को झूठ और जादू मानते थे, और अपने पूर्वजों के विश्वासों से बाहर निकलने को तैयार नहीं थे।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जब सत्य और मार्गदर्शन आया, तो लोग उसे नकारते थे क्योंकि वे अपने पुराने विश्वासों से चिपके हुए थे।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो व्यक्ति सत्य को नहीं समझता और उसे नकारता है, उसे अंत में कष्ट ही मिलता है (भगवद गीता 9.3)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि सत्य के मार्ग को नकारने और पुराने विश्वासों के प्रति अडिग रहने से व्यक्ति की आध्यात्मिक प्रगति अवरुद्ध होती है।

आयत 44

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमने तो उन लोगों को न (आसमानी) किताबें अता की तुम्हें जिन्हें ये लोग पढ़ते और न तुमसे पहले इन लोगों के पास कोई डरानेवाला (पैग़म्बर) भेजा (उस पर भी उन्होंने क़द्र न की)।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ईश्वर ने इन लोगों को सही मार्गदर्शन देने के लिए कोई किताब या पैग़म्बर नहीं भेजा, फिर भी उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि ईश्वर का मार्गदर्शन जब आता है और लोग उसे नकारते हैं, तो वह उनका दोष है, न कि ईश्वर का।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जब कोई व्यक्ति सही मार्ग को नकारता है, तो उसे पछताना पड़ता है (भगवद गीता 16.23)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि ईश्वर का मार्गदर्शन हमेशा होता है, और अगर लोग उसे नकारते हैं, तो उनका नुकसान होता है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:
"और जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया था, हालांकि हमने जितना उन लोगों को दिया था ये लोग (अभी) उसके दसवें हिस्सा को (भी) नहीं पहुँचे, उस पर उन लोगों न मेरे (पैग़म्बरों को) झुठलाया था तो तुमने देखा कि मेरा (अज़ाब उन पर) कैसा सख़्त हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि पहले के लोग भी पैग़म्बरों को झुठलाते थे, और उनकी स्थिति आज के लोगों से अधिक थी, फिर भी उन्हें सजा मिली थी।

हेतु (Reason):
यह आयत यह साबित करती है कि जब लोग ईश्वर के मार्गदर्शन को नकारते हैं, तो उनका अंत हमेशा बुरा होता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो लोग गलत मार्ग पर चलते हैं, उन्हें अंत में कष्ट ही होता है (भगवद गीता 9.11)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि पैग़म्बरों और उनके संदेशों को नकारना हमेशा भयानक परिणामों की ओर ले जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**प्रमाण (Pramana)**	**क्या भूत-परेत की पूजा वास्तव में गलत है, या यह व्यक्तिगत विश्वास का मामला हो सकता है?**
42	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या क़यामत के दिन कोई व्यक्ति किसी के काम आ सकेगा, या प्रत्येक का निर्णय अकेले उनके कर्मों पर आधारित होगा?**
43	**हेत (Reason)**	**क्या पुराने विश्वासों से बाहर निकलना इतना आसान होता है, या यह एक गहरी मानसिक प्रक्रिया है?**
44	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या यह निष्कर्ष सही है कि ईश्वर का मार्गदर्शन हमेशा स्पष्ट रूप से आता है, या यह किसी समय के अनुसार अलग-अलग हो सकता है?**
45	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या पुराने समय के लोगों को दिए गए शास्त्र और शिक्षाएँ, आज के संदर्भ में उतनी ही प्रभावी हैं?**

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में यह दिखाया गया है कि जब लोग सत्य को नकारते हैं और अपने पुराने विश्वासों को छोड़ने से इंकार करते हैं, तो उनका आध्यात्मिक पतन निश्चित होता है। ईश्वर का मार्गदर्शन कभी गलत नहीं होता, और नकारने वालों के लिए दंड निश्चित है।

आयत 51-54 का विश्लेषण:

आयत 51

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) काश तुम देखते (तो सख़्त ताज्जुब करते) जब ये कुफ्फार (मैदाने हशर में) घबराए-घबराए फिरते होंगे तो भी छुटकारा न होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि काफिरों को क़यामत के दिन कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, और उन्हें कोई बचाव नहीं मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि काफिरों के लिए क़यामत में कोई छुटकारा नहीं है, और उन्हें जो कुछ भुगतना है, वह अनिवार्य रूप से भुगतना होगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी कहा गया है कि जो व्यक्ति सत्य और धर्म से विमुख होता है, उसे अंततः दुख और कष्ट ही प्राप्त होते हैं (भगवद गीता 9.12)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि काफिरों के लिए क़यामत में कोई रक्षा नहीं है, और उनका पछतावा बेकार होगा।

आयत 52

आयत का अनुवाद:
"और आस ही पास से (बाआसानी) गिरफ्तार कर लिए जाएँगे और (उस वक़्त बेबसी में) कहेंगे कि अब हम रसूलों पर ईमान लाए और इतनी दूर दराज़ जगह से (ईमान पर) उनका दसतरस (पहुँचना) कहाँ मुमकिन है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि काफिरों के लिए ईमान लाना क़यामत के समय बेमानी होगा क्योंकि वे उस समय सिर्फ पछताएंगे।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को पुष्टि करती है कि जब समय बीत चुका होगा और उनके पास कोई अवसर नहीं होगा, तब उनका पछतावा कोई काम नहीं आएगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो लोग सत्य को पहचानने के बाद भी ईश्वर से विमुख होते हैं, वे दुख भोगते हैं (भगवद गीता 16.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि जब ईश्वर का संदेश समय पर नहीं स्वीकार किया जाता, तो अंत में केवल पछतावा ही बचता है।

आयत 53

आयत का अनुवाद:
"हालांकि ये लोग उससे पहले ही जब उनका दसतरस था इन्कार कर चुके और (दुनिया में तमाम उम्र) बे देखे भाले (अटकल के) तके बड़ी-बड़ी दूर से चलाते रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि काफिरों ने पहले भी सत्य को स्वीकार नहीं किया था, और अब भी उनका इनकार करने का कोई औचित्य नहीं है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि काफिरों के पिछले कार्यों ने उनके अंतिम समय में पछतावे की कोई संभावना नहीं छोड़ी थी।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जो लोग सत्य को पहचानने के बाद भी उसका पालन नहीं करते, उन्हें अंत में पछताना पड़ता है (भगवद गीता 16.23)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि पहले से इनकार करने वाले लोगों के लिए अंत में कोई छुटकारा नहीं है, और उनका समर्पण केवल बाद में पछतावा बन जाएगा।

आयत 54

आयत का अनुवाद:
"और अब तो उनके और उनकी तमन्नाओं के दरमियान (उसी तरह) पर्दा डाल दिया गया है जिस तरह उनसे पहले उनके हमरंग लोगों के साथ (यही बरताव) किया जा चुका इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बेचैन करने वाले शक में पड़े हुए थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि काफिरों के लिए अब कोई रास्ता नहीं बचा है, और उनका और उनके इच्छाओं के बीच पर्दा डाल दिया गया है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह पुष्टि करती है कि जैसे पहले लोग सत्य के मार्ग से भटकते थे, वैसे ही अब काफिरों के लिए कोई विकल्प नहीं है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि जो लोग सत्य को छोड़कर गलत मार्ग पर चलते हैं, वे अंत में बर्बाद होते हैं (भगवद गीता 9.11)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि जब कोई व्यक्ति सत्य से विमुख होता है, तो उसका पछतावा उसे किसी लाभ की स्थिति में नहीं लाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**प्रमाण (Pramana)**	**क्या काफिरों के लिए क़यामत में कोई छूट या रास्ता हो सकता था?**
52	**हेत (Reason)**	**क्या पछतावा केवल अंत में होता है, या यह किसी सुधार की संभावना रखता है?**
53	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या पहले किए गए कार्यों का प्रभाव अंतिम समय में परिवर्तन का अवसर छोड़ता है?**
54	**विपरीत (Antithesis)**	**क्या सत्य से विमुख होने के बाद कोई अवसर बचता है, या व्यक्ति स्वयं को विफलता की ओर ले जाता है?**

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में यह दर्शाया गया है कि काफिरों के लिए क़यामत के दिन पछतावा केवल उनके दोष को और

बढ़ा देगा। यह सिद्ध किया गया है कि सत्य से विमुख होने के बाद कोई रास्ता नहीं बचता, और उनका सामना कठिनाई से होगा।